

समयं कृत्वा दुर्मतिर्नाभिपद्यते R. 4,30,8. कुरु त्तिप्रं वचो ऽस्माकं ततः श्रे-
यो ऽभिपत्स्यते MBh. 3,8469. HARIV. 11215. *sich hinbegeben zu, kom-
men zu, gelangen zu; mit dem acc.: सोममेवाभ्यपद्यत दाक्षत्राभिप्रपी-
डिताः* MBh. 13,4875. रावणावरजा तत्र राघवं मदानतुरा । अभिपेदे नि-
दाघार्ता व्यालीव मलयद्रुमम् ॥ RAGH. 12,32. BHĀG. P. 3,17,31. त एनं लो-
लुपतया मैथुनायाभिपेदिरे 20,23,26,4. पानभूमिर्चनाः — अभ्यपद्यत — पु-
ष्पिताः कमलिनोरिव द्विपः RAGH. 19,11. चन्द्रमा न यथावद्भि नत्त्रापय-
भिपद्यते R. 6,16,10. तत्राभिपद्य वातापे ब्राह्मणास्येदं यथा । भवत्यवज्ञा
3,49,52. पतत्रिणाः — पादपानभिपेदिरे 2,63,16. वनम् 1,55,11 (56,11
GORR.). अनेन चैव देहेन लोकास्वमभिपत्स्यसे MBh. 13,170. दिवम् ÇAT.
Br. 11,1,7. काष्ठाम् AIT. Br. 4,9. mit dem loc.: अभिपद्यमानो मकरा-
दिषु रश्मिषु (die Sonne) BHĀG. P. 5,21,3. तस्याञ्जलयुदके काचिच्छर्कर्य-
काभ्यपद्यत *gerathen in* 8,24,12. *sich zu einer Gottheit hinbegeben so
v. a. bei ihr Schutz suchen, ihr seine Verehrung bezeigen: लपामभ्यपद्यत
जनैर्न मया गगनं गणाधिपतिमूर्तिरिति* ÇAT. 9,27. अभिपन्न = शरणाथिन
Schutz suchend TBH. 3,1,2. H. 479. — 2) Jmd. (acc.) zu Hilfe kom-
men, sich auf Jmds Seite stellen: यो ऽन्वयो मातृकस्तस्य स एनमभिये-
दिवान् MBh. 6,4043. यस्त्वमस्यामवस्थायां धातरं नाभिपद्यसे R. 3,51,9.
66,19. मरुतश्चैव विश्वे च रुद्रमेवाभिपद्यत (sic) HARIV. 12253. मयाभिपन्नं
तं चापि न सर्वो धर्षयिष्यति MBh. 1,1981. 4,704. मया (ÇrI spricht) दै-
त्याः परित्यक्ता विनष्टाः शाश्वतीः समाः । मयाभिपन्ना देवाश्च मोदन्ते शाश्वतीः
समाः ॥ 13,3856. fgg. — 3) erfassen, in die Hand bekommen, erwi-
schen, Jmd auf den Leib rücken, sich über Jmd hermachen, über Jmd
kommen, sich Jmdes bemächtigen: पूर्वार्धे दण्डस्य ÇAT. Br. 3,7,4,26.
बिलम् 6,5,2,20. इष्टकाम् 2,1,2,16. स्तनम् 9,5,1,5,1,2,3. 3,1,2,11.
4,2,17. ÇĀṆKH. Çr. 5,10,5. ततः सः — किरन् शरशतैस्तीक्ष्णैरभिपेदे म-
हाकपिम् R. 5,41,24. प्रमतम् — त्वमप्रमतः सक्तुसाभिपद्यसे नुष्टेलिहानो
ऽहिरिवाखुमत्तकः BHĀG. P. 4,24,66. सर्वतश्चाभिपन्नैषा धार्तराष्ट्री महाच-
मूः । पाञ्चलिर्मानसदित्य कूर्सेर्गङ्गेव वेगितिः ॥ MBh. 8,3047. तस्य कृष्णाभि-
पन्नस्य पाण्डितस्य बलीयसः । मुखाद्गुधिरमत्यथर्मुस्सगाम मुमूर्षतः ॥ HARIV.
4737. MBh. 3,676. व्याघ्राभिपन्ना बलवानिवोता R. GORR. 2,9,46. 5,28,1.
यदिदं सर्वं मृत्युनाभिपन्नम् ÇAT. Br. 14,6,2,5. ज्ञायाम् 9,4,19. वाचमभिपद्य
पापयो RV. 10,71,9. न पाण्डितः क्रुध्यति नाभिपद्यते *tritt Niemand zu
nahe* MBh. 12,8202. चाण्डवाताभिपन्नानामुद्धीनामिव स्वनः MBh. 7,
6782. देवाभिपन्न R. 2,22,30. कालाभिपन्नाः सीदन्ति सिकतासेतवो यथा 3,
74,31. BHĀG. P. 1,13,19. कश्मलेनाभिपन्ने — अर्जुने MBh. 1,179. तत्सखा-
भिपन्न *erfasst* (von einem bösen Dämon) SUÇR. 2,383,7. वात°, पित्त°,
कफ°, रक्त° 312, 1 v. u. 313, 2. 4. 6. दृष्टिर्दोषाभिपन्ना 318, 20. दोषा-
नभिपन्न 1,128, 2. अभिपन्न = अभिप्रस्त, व्यापन्नत (आपन्नत) AK. 3, 4,
16, 131. MED. n. 161. = अभिद्रुत VIÇVAPR. ÇABDAR. AĠAJAP. BUṆIPR.
bei GOLD. u. अभिपन्न, wo jenes Wort durch *come near, run towards*
wiedergegeben wird, während es nach unserem Dafürhalten in der
pass. Bed. aufzufassen ist. — 4) zu Etwas gelangen, bekommen, in den
Besitz von Etwas gelangen: पयर्तुलिङ्गान्यृतवः स्वयमेवर्तुर्पये । स्वानि
स्वान्यभिपद्यन्ते तथा कर्माणि देहेन ॥ M. 1,30. धर्माद्याभिपेदिरे MBh.
1,2805. — 5) annehmen: राष्यं गतन्नं साधो पीतमण्डो मुरामिव । नि-
रास्वाद्यतमं शून्यं भरतो नाभिपत्स्यते ॥ R. 2, 36, 12. आत्तं राष्यमिदं प-
श्चात्तथा धात्रा यवोयसा । नाभिपत्तुमलं रामः पीतसोममिवाधरम् ॥ R. GORR.
IV. Theil.

2,62,27. पित्रा भुक्ता नृपश्चीर्हि दयाद्यं तस्य धीमतः । नाभिपत्तुं मया श-
क्या सावित्री वृषलेरिव ॥ 88,18. अभिपन्न = स्वीकृत AĠAJAP. = अङ्गीकृ-
त ÇABDAMUKTĀV. bei GOLDST. u. अभिपन्न. — 6) an Etwas gehen, sich
machen an Etwas, sich hingeben: (अपः) प्रथमेन कर्मणाभिपद्यते ÇAT. Br.
1,1,2,12. चित्तमभ्यपद्यत R. 2,63,1. अनर्थं तत्कृतं चाभिपद्यते BHĀG. P.
1,7,5. काले दिष्टमेवाभ्यपद्यत 9,18,32. अधर्मं धर्मवेशेन यद्यत् लोकसंकर-
म् । अभिपत्स्ये शुभं कृत्वा R. 2,109,6 (118,6 GORR.). स्ववृत्तिमभिपन्नाय
लिङ्गिने चेतुराय च । देयमाहुः MBh. 13,1532. चिकित्साबोजम् — कुश-
लेनाभिपन्नं तद्वहुधाभिप्रोदति *wenn ein geschickter Mann daran geht*
SUÇR. 2,360,15. — 7) अभिपन्न = अपराह *schuldig, der sich vergangen*
hat AK. 3,4,16, 131. dafür fälschlich अपराध MED. n. 161. — 8) अभिपन्न
entfernt AĠAJAP. und ÇABDAMUKTĀM. bei GOLDST. u. अभिपन्न. Eher könnte
अभिपन्न *nahe* (vgl. u. 3. am Ende) bedeuten. — 9) अभिपन्न *gestorben,*
totd BHĀṬIK. ebend. — Vgl. अभिपत्ति.

— समभि 1) *kommen, gelangen zu, in:* तत्रैव वसतां तेषां प्रावृद्धमभि-
पद्यत MBh. 3,12539. पुत्रज्ञानं परीत्सन्वै पृथिवीमन्वसं चरतु । अहिक्षुर्न
च विषयं द्रोणाः समभिपद्यत 1,5515. पुरुषः केश्य कर्मभिः । स्वर्गं समभिपद्यते
13,6683. देहादेकसक्तुलाणि तथा समाभिपद्यते 12,11263. — 2) *antworten:*
कस्य कर्मदमिति ते पर्यपृच्छन्समागताः । पुत्रनाशो ममेत्येव सत्यं समभिप-
द्यत MBh. 3,10441.

— अत्र 1) *herab —, hinab —, ausfallen:* मा स्वरूर्व पादि दिवस्पादि
(könnte auch u. पर्यव gestellt werden) RV. 1,105,3. त्राधं कर्तादिवपदः 2,
29,6. 7,104,17. 8,4,17. कर्तमत्रं पदात्यप्रभुः 9,73,9. न केशो ऽवं पद्यते
6,54,3. 4,13,5. केशः AV. 6,136,3. गर्भाः 5,17,7. KHĀND. UP. 2,9,7. —
AV. 8,1,4. TBH. 2,1,2,1. ÇAT. Br. 8,5,3,7. PAÑĀV. Br. 14,1,12. केश-
कीटावपन्न (vgl. केशकीटावपतित u. 1. पत् mit अत्र) *worauf eine Haar-
laus gefallen ist* M. 4,207. 11,159. MBh. 9,2425. MĀRK. P. 32,25. 34,
55. 50,44. अत्रलीटावपन्न *was beleckt worden ist und worauf Etwas ge-
fallen ist* 34,56. *entfallen:* अत्रं पद्यतामेषामामुधानि AV. 8,8,20. — 2)
einer Sache (abl.) verlustig gehen: मावं पत्सि लोकात् AV. 6,120,2.
राष्ट्रात् AIT. Br. 8,23. अग्र्याः PAÑĀV. Br. 12,13,11. — 3) *zu Fall kom-
men, verunglücken:* नेच्छन्दसो कृच्छ्रादवपद्ये AIT. Br. 4,4. — 4) *stürzen:*
इत्थं वाव नः सर्वानुसरा अत्रपत्स्यति KĀṬH. 29,1. — Vgl. अत्रपादं (TBH. 1,
2,2,2,5, 13,1), स्वयमवपन्न. — *caus. herunter —, hinabfallen machen*
AV. 8,6,16. अन्धा तमांस्यर्वं पादैरान् 9,2,20. SUÇR. 1,60,2, wo अत्रपाद्य
तु zu trennen ist.

— व्यव auseinander und herabfallen ÇAT. Br. 3,5,2,25. 6,2,25.

— आ 1) *herankommen, nahen:* एष रावणिरापादि वानराणां भयंकरः
BHĀṬI. 13,89. अहिरिवाखुविलं डुरतिक्रमः कालः करालरभस आपद्यत
BHĀG. P. 5,8,25. — 2) *eintreten in, betreten, gelangen zu:* नावम् ÇAT.
Br. 1,8,4,4. 5. लोकम् 14,9,1,2. पन्थानम् LĪṬI. 1,1,23. रावणस्य पुरीं
लङ्कामापेदतुः R. 6,16,21. वक्रमापद्य मारुतः ÇIKSHĀ 11 in Ind. St. 4,
107. 351. — 3) *hineingerathen in, in eine Stimmung, eine Lage, ein
Verhältniss, einen Zustand gerathen:* अग्रिमापत्स्यति AIT. Br. 4,7. तस्य
मत्स्यः पाणी आपदे ÇAT. Br. 1,8,2,1. व्यात्तम् 6,4,18. आपन्नं स्तुषान्नि-
स्येतु *das* (in die Vedi) *hineingerathene* KĀṬH. Çr. 2,6,41. यस्यामिदोत्रं
देह्यमानममेध्यमापद्यते ÇAT. Br. 12,4,2,2. AIT. Br. 7,5. यदत्र किंचि-
दापन्नं भवति ÇAT. Br. 1,1,2,15. दर्शनपथम् Spr. 1202. दारितम् ÇAT.